International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-08-2019; Accepted: 03-09-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 01-03

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की भूमिका

युगल किशोर यादव
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तिनसुकिया कामर्स कॉलेज, तिनसुकिया, असम, भारत

सारांश
भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी भावनाओं एवं विचारों को प्रकट करता है। लेकिन समस्या तब आन खड़ी होती है जब सामने वाला व्यक्ति हमारी भाषा को नहीं समझ पाता है। ऐसे में किसी तीसरे व्यक्ति की जरूरत पड़ती है जो दो अलग अलग भाषाएँ जानने वाले लोगों के बीच सेतु का काम करता है। ऐसा व्यक्ति दोनों भाषाओं का जानकार होता है जो बारी-बारी से दो अलग अलग भाषाएँ जानने वाले लोगों की बातों को सुनता है और उसका अनुवाद कर उन्हें बताता है। 'अनुवाद' कहने से हमारा अभिप्राय एक भाषा में जो बात लिखी व कही गयी है उसके मूलभाव की रक्षा करते हुए दुसरी भाषा में प्रकट करना होता है।

वर्तमान समय में अनुवाद की प्रासंगिकता काफी बढ़ चुकी है। अनुवाद विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध साहित्य एवं संस्कृति के ज्ञान से हमें परिचित करवाती है। विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध उत्कृष्ट साहित्य के मर्म को समझने में अनुवाद सहायक होता है। अनुवाद द्वारा ही किसी क्षेत्र विशेष के साहित्य एवं साहित्यकारों को आज हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठा मिल पायी हैं। आज विज्ञान के इस उन्नत युग में भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान के किसी भी स्तर पर देखा जाए अनुवाद की भूमिका सिद्ध होती हुई दिखलाई दे रही है। आज अनुवाद अपने मौखिक एवं लिखित, दोनों रूपों में सक्रिय भूमिका निभा रही है।

मूल शब्द: अनुवाद, साहित्य, मिडिया, राष्ट्रीय एकीकरण।

प्रस्तावना
अनुवाद का प्रारम्भ किस काल में हुआ, यह कहना कठिन है। भारत में अनुवाद का इतिहास बहुत पुराना है। अनुवाद शब्द का प्रयोग संस्कृत ग्रंथों में मिलता है। उस समय अनुवाद के लिए 'छाया', 'भाषाटीका' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता था। भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी भावनाओं एवं विचारों को प्रकट करता है। अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के लोगों को जोड़ने वाले सेतु का कार्य करता है। प्रयोजन की दृष्टि से अनुवाद आज मानव जीवन की अनिवार्यता बन चुकी है। विज्ञान के इस उन्नत युग में भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शन, व्यापार, शिक्षा, कानून, प्रशासन, रोजगार इत्यादि के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका सिध्द होती हुई सी दिखलाई दे रही है। आज अनुवाद मौखिक एवं लिखित, दोनों रूपों में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है। अत: मूल रूप से कहे तो किसी भी देश तथा विश्व समुदाय के लिए ज्ञान एवं भावानुभूतियों के आदान-प्रदान की पर्याप्त जरूरत है अनुवाद।

अनुवाद अर्थ एवं परिभाषा
किसी एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरण करने को 'अनुवाद' कहा जाता है। अनुवाद शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों के मिलन से हुआ है। "अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है अनु+वाद=अनुवाद। 'अनु' उपसर्ग का अर्थ होता है पीछे या अनुगमन करना तथा 'वाद' शब्द का संबंध है 'वद्' धातु से, जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना।" [1] अत: अनुवाद का शाब्दिक अर्थ हुआ किसी के कहने या बोलने के बाद बोलना।

वैसे तो अनुवाद की अनेक परिभाषा पढ़ने को मिलती हैं उनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार हैं। अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध कोश 'आक्सफोर्ड डिक्शनरी' में अनुवाद को इस प्रकार परिभाषित किया गया है अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में रूपांतरित किया जाता है। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री नायडा के अनुसार अनुवाद स्त्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लिये लक्ष्य भाषा में निकटत्तम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना है। वे अर्थ और शैली, दोनों ही स्तर पर समतुल्यता पर जोर देते है। भारतीय विद्वान डॉ. भोलानाथ तिवारी अनुवाद के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखते है "एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।" [2] देवेन्द्रनाथ शर्मा भी विचारों का एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलने को अनुवाद कहते है। इस प्रकार अनुवाद की अलग अलग परिभाषा अवश्य देखने को मिलती है परन्तु इनमें कुछ ज्यादा अंतर भी देखने को नहीं मिलता है। अत: अनुवाद में पहले से उपलब्ध किसी भी वस्तु के मूलभाव की रक्षा करते हुए उसे नये रूप में, नये ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। अनुवाद को पुन:सृजन भी कहा जा सकता है।

अनुवाद की भूमिका
भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। ऐसे में जरूरी नहीं कि हर व्यक्ति अपनी मातृभाषा के अलावा भी कोई दूसरी भाषा जानती व समझती हो। ऐसी परिस्थिति में उसे दूसरों से वार्तालाप करने तथा अन्य भाषाओं में उपलब्ध कार्यों को करने में बहुत सारी परेशानियों से होकर गुजरना

पड़ता है। तब उसे अनुवाद की सहायता लेनी पड़ती है। जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की अनिवार्यता बढ़ चुकी है। राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर आपसी संबंधों को सुधारने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अनुवाद अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है। जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में अनुवाद की आवश्यकता महसूस की जा रही है। प्रो. जी. गोपीनाथन के शब्दों में "अनुवाद मानव की मूलभूत एकता की व्यक्ति चेतना एवं विश्व चेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है।" [3]

भाषा द्वारा ही मनुष्य जीवन की अनुभूतियों को प्रकट करता है अर्थात अपने भावों तथा विचारों को दूसरों के समक्ष रखता है। इन्हीं भावों और विचारों के आदान-प्रदान द्वारा ही देश तथा समाज में भावात्मक एवं भावनात्मक एकता कायम होती है। हमारा देश भारत अपनी भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं जातीय अलगाव के कारण छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त है। इस अलगाव को दूरकर लोगों में भावनात्मक एकता कायम करनी जरूरी है। यह तभी संभव हो सकती हैं जब अलग-अलग जाति, समाज, संप्रदाय एवं संस्कृति के लोगों के बीच एक दूसरे की भावनाओं और विचारों का आदान-प्रदान हो। इस कार्य के लिए अनुवाद का सहारा लिया जा रहा है। न सिर्फ भारत में ही बल्कि विश्व स्तर पर भी यह कार्य जरूरी है। "विश्व समाज भिन्न-भिन्न राष्ट्रों, भूखंडों, धर्मों, वर्णों और जातियों में विभक्त है। हर राष्ट्र और समाज की अपनी भाषीक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक पहचान होती है। इस विभाजित मानव समुदाय को भावात्मक और भावनात्मक धरातल पर जोड़कर उनके मध्य बनी हुई विषमता की खाई को पाटना ही अनुवाद का प्रधान लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुवाद एक सेतु बन गया है।" [4]

भारत विभिन्न संस्कृतियों की लीलाभूमि है। कई राज्यों का समूह भारत में विभिन्न संस्कृति के दर्शन होते हैं। सभी राज्य अपनी-अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं से परिपूर्ण भारतीय संस्कृति को धन-धान्य करती है। यदि भारत की सांस्कृतिक एकता को और अधिक सुदृढ़ करनी है तो आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति, जो साहित्य के रूप में उपलब्ध है; उनका हिंदी के साथ साथ अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कर सभी के लिए पठनीय और अध्ययन योग्य बनाया जाए। जब तक किसी एक क्षेत्रीय विशेष के लोग किसी दुसरे क्षेत्र विशेष की संस्कृति को जानने-समझने की कोशिश नहीं करेंगे, तब तक भारत की सांस्कृतिक एकता को मजबूती नहीं मिल पाएगी। यह बात सत्य है कि 'संस्कृति छुपाकर रखने की वस्तु नहीं है।' किसी भी संस्कृति का विकास तभी संभव है जब लोग उस संस्कृति से परिचित हो तथा उसमें से ग्रहण करने योग्य चीजों को आत्मसात करते चले। भाषीक विभेदता के कारण यह कार्य मुश्किल जरूर लगती है किंतु असंभव नहीं। विभिन्न भाषाओं के साहित्य के सामूहिक अध्ययन से किसी भी समाज, देश तथा विश्व की चिंतनधारा एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसी आवश्यकता ने आज अनुवाद की भूमिका को व्यापक बना दिया है। देश एवं विदेश के विभिन्न भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद द्वारा और भी आसान हो गया है। आज अनुवाद द्वारा ही किसी क्षेत्र विशेष के साहित्य एवं उनके साहित्यकारों को हिंदी साहित्य मे प्रतिष्ठा मिल पायी है।

वैश्वीकरण के दौर ने बाजारवाद को बढ़ावा दिया है, फलस्वरूप तेजी से व्यापार-वानिज्य में बढ़ोतरी हो रही है। कम्पनियाँ अपने-अपने उत्पादों की बिक्री हेतु विज्ञापन द्वारा उपभोक्ताओं को लुभाने में लगी हुई हैं। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में किसी एक भाषा में स्वदेशी या विदेशी वस्तुओं का विज्ञापन कर उसकी बिक्री संभव नहीं है। इसलिए विज्ञापन निर्माण में भी अनुवाद का सहारा लिया जा रहा है। "किसी भी उत्पाद को बेचने के लिए वाचिक और लिखित रूप में विज्ञापन प्रणाली के द्वारा उस उत्पाद का प्रचार किया जाता है। यह प्रचार सामग्री अनेक भाषाओं में पेशेवर विज्ञापन विशेषज्ञ तैयार करते हैं। विज्ञापन का बाजार अनुवाद पर ही आधारित होता है।" [5] यह विज्ञापन मीडिया द्वारा प्रसारित किये जाते है। मीडिया के क्षेत्र में भी अनुवाद की सक्रिय भूमिका रही है। आज जनसंचार के माध्यमों में जो परिवर्तन हुए है उसने विश्व की दिशा को ही बदलकर रख दिया है। मीडिया द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुदित कर सभी के लिए सुलभ बनाया जा रहा है। गाँव से लेकर शहर तक, एक देश से दूसरे देश तक कोई भी सूचना किसी भी भाषा में प्रसारित करना हो, अनुवाद द्वारा ही संभव हो पाया है। फिल्मों की डबिंग (ध्वन्यंतरण) की प्रणाली भी अनुवाद की प्रक्रिया पर ही आधारित है। अनुवाद की प्रासंगिकता रोजगार के अवसर पर भी सिद्ध हो चुकी है। जब से हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया, तत्पश्चात इसके केंद्रिय सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, संस्थानों प्रतिष्ठानों में हिंदी अनुवादक के रूप में नियुक्तियाँ दी जा रही हैं। पर्यटन के क्षेत्र में भी अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

अनुवाद की समस्या एवं समाधान

किसी भी प्रस्तुत सामग्री, जो किसी एक भाषा में उपलब्ध है, को दूसरी भाषा में रुपांतरित करने को अनुवाद कहते है। परन्तु अनुवाद कार्य भी इतना सरल नहीं हैं क्योंकि मूल अवतरण में जो मूलभाव निहित है अनुवाद करते समय, जिस भाषा में उसका अनुवाद करना है, सुरक्षित रखना जरूरी होता है।

अनुवाद एक कठिन कार्य है क्योंकि अनुवादक को कई सारी समस्यओं से जुझना पड़ता है, कई चुनौतियों से होकर गुजरना पड़ता है। "यहां अनुवाद के क्षेत्र में आने वाली कुछ चुनौतियों का उल्लेख किया जा रहा है:-

मूल कृति की भाषा का अल्प ज्ञान
अनुवाद भाषा का पूर्ण ज्ञान न होना
उपयुक्त पर्यायों के चयन की समस्या
सीमा एवं समयाभाव
निर्देश पुस्तकों की कमी आदि|" [6]

चूँकि अनुवाद कार्य बड़ा ही चुनौतीपूर्ण है। एक अच्छा अनुवादक चुनौतियों का सामना करने को हमेशा तैयार रहता है। इसके लिये उसे नित्य पठन-पाठन व अध्ययन कर अनुवाद के लिये पर्याप्त सामग्री के ज्ञान से स्वयं को तैयार करना पड़ता है। अनुवाद में किसी एक भाषा में

प्रस्तुत विचारों को दूसरी भाषा में प्रकट किया जाता है। इसके लिये अनुवादक को जिस भाषा 'से' तथा जिस भाषा 'में' अनुवाद करना है उनमें निपुणता आवश्यक है। भाषा की संवेदना के ज्ञान के अभाव में अनुवाद प्रभावकारी हो ही नहीं सकता, वह निर्जीव अनुवाद कहलाएगा। इसके साथ ही दोनों भाषाओं की संरचना, व्याकरण, सामाजिक-सांस्कृतिक-ऐतिहासिक संदर्भों की जानकारी व समझ होनी जरूरी है। कब शब्दों का अनुवाद किया जाए तथा कब शब्दार्थ से ज्यादा ध्यान भावार्थ पर दिया जाए, इसकी दक्षता अनुवादक में होनी चाहिए। अनुवाद करते समय वहां की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का भान होना भी आवश्यक है। क्योंकि "शब्दों और वाक्यांशों का अनुवाद अपने देश की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार होता है। जैसे अंग्रेजी में 'वार्म रिसेप्शन' इसलिए प्रचलित हुआ कि इंग्लैण्ड जैसे ठंडे देशों में इसकी आवश्यकता थी। इसी शब्द के लिये भारत जैसे समतापमान वाले देशों में इसे 'हृदय को शीतल करना' कहा जा सकता है। इसलिये अनुवादक को एक ही समय में स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा दोनों की भौगोलिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखना होता है।" [7] किसी भीं संस्कृति के भाव को समझे बिना उस संस्कृति विशेष का अनुवाद बड़ा हानिकारक होता है। अर्थात संस्कृति के मर्म को समझे बिना ही उसका अनुवाद करना यानि 'बिच्छू का मंत्र न जाने, साँप की बिल में हाथ डालने वाली बात है।' भले ही अनुवाद कार्य में समस्याएँ और चुनौतियाँ अधिक प्रतीत होती है, किंतु यह भी सत्य है कि इन्हें दूर नहीं किया जा सकता, ऐसा नहीं है। बशर्ते सकारात्मक सोच एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण तथा सतत प्रयास के द्वारा हर चुनौती का निवारण संभव है।

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि आज जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद का प्रयोजन सिद्ध हो रहा है। व्यवहारिक जीवन से लेकर ज्ञान-विज्ञान, व्यापार, रोजगार, साहित्य, संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में भी अनुवाद की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। अनुवाद मानव समुदाय के बीच ज्ञान के आयात का माध्यम है। अनुवाद न सिर्फ राष्ट्रीय भावनाओं को सुदृढ़ करती है बल्कि मानवता तथा विश्व बंधुत्व की स्थापना भी करती है। आज अनुवाद मात्र ट्रांसलेशन (*Translation)* ही नहीं रह गया है, उसकी यात्रा बहुत लंबी है। अनुवाद की यात्रा आज संवेदनाओं की धरातल तक पहुँच चुकी है। इस दृष्टि से अनुवाद कार्य का महत्व काफी बढ़ चुका है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. जोगिन्द्र कुमार यादव, वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्व एवं प्रासंगिकता, शब्द-ब्रह्म, दिसंबर 17, 2012 , ISSN:- 2320-0871
2. डॉ० भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, पृ. 28
3. अनुवाद की महत्ता एवं आवश्यकता, www. scotbuzz.org , Dec11, 2017
4. प्रो. एम. वेंकटेश्वर, वैश्वीकरण के परिदृश्य में अनुवाद की भुमिका, साहित्यकुंज, ISSN- 2292:4754
5. वही
6. डॉ. जोगिन्द्र कुमार यादव, वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्व एवं प्रासंगिकता, शब्द-ब्रह्म, दिसंबर 17, 2012 , ISSN:- 2320-0871
7. प्रसेनजित कुमार, अनुवाद्यता के चरण और शब्दावली, गवेषणा, अंक-107, 201661A